महाशिवरात्रि महोत्सव तथा उसका आख्यान

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी

डॉ. रघुवरीप्रसाद शर्मा
प्रधानाध्यापक
राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, जयपुर

शिवरात्रि का अर्थ वह रात्रि है जिसका शिवतत्त्व के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। भगवान् शिवजी की अतिप्रिय रात्रि को 'शिवरात्रि' कहा गया है।

शिवार्चन और जागरण ही इस व्रत की विशेषता है। इसमें रात्रिभर जागरण एवं शिवाभिषेक का विधान है।

श्रीपार्वतीजी की जिज्ञासा पर भगवान् शिवजी ने बताया कि फाल्गुन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी शिवरात्रि कहलाती है। जो उस दिन उपवास करता है, वह मुझे प्रसन्न कर लेता है। मैं अभिषेक, वस्त्र, धूप, अर्चन तथा पुष्पादि समर्पण से उतना प्रसन्न नहीं होता जितना कि व्रतोपवास से-

फाल्गुने कृष्णपक्षस्य या तिथिः स्याच्चतुर्दशी।
तस्यां या तामसी रात्रिः सोच्यते शिवरात्रिका ।।

तत्रोपवासं कुर्वाणः प्रसादयति मां ध्रुवम्।
न स्नानेन न वस्त्रेण न धूपेन न चार्चया।
तुष्यामि न तथा पुष्पैर्यथा तत्रोपवासतः ।।

ईशान संहिता में बताया गया है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि को आदि देव भगवान् श्री शिव करोड़ों सूर्यों के समान प्रभावाले लिङ्गरूप में प्रकट हुए।

फाल्गुनकृष्ण चतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि ।
शिवलिङ्गतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः ।।

शिवरात्रि व्रत की वैज्ञानिकता तथा आध्यात्मिकता

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि में चन्द्रमा सूर्य के समीप होता है। अतः वही समय जीवनरूपी चन्द्रमा का शिवरूपी सूर्य के साथ योग-मिलन होता है। अतः इस चतुर्दशी को शिवपूजा करने से जीव को अभीष्टतम पदार्थ की प्राप्ति होती है। यही शिवरात्रि का रहस्य है।

महाशिवरात्रि का पर्व परमात्मा शिवके दिव्य अवतरण का मङ्गलसूचक है। उनके निराकार से साकाररूप में अवतरण की रात्रि ही महाशिवरात्रि कहलाती है। वे हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सरादि विकारों से मुक्त करके परम सुख, शान्ति, ऐश्वर्यादि प्रदान करते हैं।

चार प्रहर की पूजा का विधान चार प्रहरमें चार बार पूजा का विधान है। इसमें शिवजी को पञ्चामृत से स्नान कराकर चन्दन, पुष्प, अक्षत, वस्त्रादि से श्रंगार कर आरती करनी चाहिये। रात्रिभर जागरण तथा पञ्चाक्षर-मन्त्र का जप करना चाहिये। रुद्राभिषेक, रुद्राष्टाध्यायी तथा रुद्रीपाठ का भी विधान है।

प्रथम आख्यान

पद्मकल्प के प्रारम्भ में भगवान् ब्रह्मा जब अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज्ज एवं देवताओं आदि की सृष्टि कर चुके, एक दिन स्वेच्छा से घूमते हुए क्षीरसागर पहुँचे। उन्होंने देखा भगवान् नारायण शुभ्र, श्वेत सहस्रफणमौलि शेष की शय्या पर शान्त अधलेटे हुए हैं। भूदेवी, श्रीदेवी, श्रीमहालक्ष्मी जी शेषशायी के चरणों को अपने अङ्क में लिये चरण-सेवा कर रही हैं। गरुड, नन्द, सुनन्द, पार्षद, गन्धर्व, किन्नर आदि विनम्रतया हाथ जोड़े खड़े हैं। यह देख ब्रह्माजी को अति आश्चर्य हुआ। ब्रह्माजी को गर्व हो गया था कि मैं एकमात्र सृष्टिका मूल कारण हूँ और मैं ही सबका स्वामी, नियन्ता तथा पितामह हूँ। फिर यह वैभवमण्डित कौन यहाँ निश्चिन्त सोया है। श्रीनारायण को अविचल शयन करते हुए देखकर उन्हें क्रोध आ गया। ब्रह्माजी ने समीप जाकर कहा- तुम कौन हो? उठो! देखो, मैं तुम्हारा स्वामी, पिता आया हूँ।

शेषशायी ने केवल दृष्टि उठायी और मन्द मुसकान से बोले-वत्स! तुम्हारा मङ्गल हो। आओ, इस आसन पर बैठो। ब्रह्माजी को और अधिक क्रोध हो आया, झल्लाकर बोले- मैं तुम्हारा रक्षक, जगत्का पितामह हूँ। तुमको मेरा सम्मान करना चाहिये। इस पर भगवान् नारायण ने कहा- जगत् मुझमें स्थित है, फिर तुम उसे अपना क्यों कहते हो? तुम मेरे नाभि-कमल से पैदा हुए हो, अतः मेरे पुत्र हो। मैं स्रष्टा, मैं स्वामी- यह विवाद दोनों में होने लगा। श्रीब्रह्माजी ने 'पाशुपत' और श्रीविष्णुजी ने 'माहेश्वर' अस्त्र उठा लिया। दिशाएँ अस्त्रों के तेज से जलने लगीं, सृष्टि में प्रलय की

आशंका हो गयी थी। देवगण भागते हुए कैलास पर्वत पर भगवान् विश्वनाथ के पास पहुँचे। अन्तर्यामी भगवान् शिवजी सब समझ गये। देवताओं द्वारा स्तुति करने पर वे बोले-'मैं ब्रह्मा-विष्णु के युद्ध को जानता हूँ। मैं उसे शान्त करूँगा। ऐसा कहकर भगवान् शङ्कर सहसा दोनों के मध्य में अनादि, अनन्त-ज्योतिर्मय स्तम्भ के रूप में प्रकट हुए।'

शिवलिङ्गतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः ॥

माहेश्वर, पाशुपत दोनों अस्त्र शान्त होकर उसी ज्योतिर्लिङ्ग में लीन हो गये।

यह लिङ्ग निष्कल ब्रह्म, निराकार ब्रह्मका प्रतीक है। श्रीविष्णु और श्रीब्रह्माजी ने उस लिङ्ग (स्तम्भ) की पूजा-अर्चना की। यह लिङ्ग फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को प्रकट हुआ तभी से आज तक लिङ्ग पूजा निरन्तर चली आ रही है। श्रीविष्णु और श्रीब्रह्माजी ने कहा-महाराज ! जब हम दोनों लिङ्ग के आदि-अन्त का पता न लगा सके तो आगे मानव आपकी पूजा कैसे करेगा? इस पर कृपालु भगवान् शिव द्वादश ज्योतिर्लिङ्गमें विभक्त हो गये। महाशिवरात्रि का यही रहस्य है (ईशानसंहिता)।

द्वितीय आख्यान

वाराणसी के वन में एक भील रहता था। उसका नाम गुरुद्रुह था। उसका कुटुम्ब बड़ा था। वह बलवान् और क्रूर था। अतः प्रतिदिन वन में जाकर मृगों को मारता और वहीं रहकर नाना प्रकार की चोरियाँ करता था। शुभकारक महाशिवरात्रि के दिन उस भील के माता-पिता, पत्नी और बच्चों ने भूख से पीड़ित होकर भोजन की याचना की। वह तुरंत धनुष लेकर मृगों के शिकार के लिये सारे वन में घूमने लगा। दैवयोग से उस दिन कुछ भी शिकार नहीं मिला और सूर्य अस्त हो गया। वह सोचने लगा- अब मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? माता-पिता, पत्नी, बच्चों की क्या दशा होगी? कुछ लेकर ही घर जाना चाहिये, यह सोचकर वह व्याध एक जलाशय के समीप पहुँचा कि रात्रि में कोई-न-कोई जीव यहाँ पानी पीने अवश्य आयेगा-उसी को मारकर घर ले जाऊँगा। वह व्याध किनारे पर स्थित बिल्ववृक्ष पर चढ़ गया। पीने के लिये कमर में बँधी तुम्बी में जल भरकर बैठ गया। भूख- प्यास से व्याकुल वह शिकार की चिन्ता में बैठा रहा।

रात्रि के प्रथम प्रहर में एक प्यासी हरिणी वहाँ आयी। उसको देखकर व्याध को अति हर्ष हुआ, तुरंत ही उसका वध करने के लिये उसने अपने धनुष पर एक बाण का संधान किया। ऐसा करते हुए उसके हाथ के धक्के से थोड़ा-सा जल और बिल्वपत्र टूटकर नीचे गिर पड़े। उस वृक्ष के नीचे शिवलिङ्ग विराजमान था। वह जल और बिल्वपत्र शिवलिङ्ग पर गिर पड़ा। उस जल और बिल्वपत्र से प्रथम प्रहर को शिव-पूजा सम्पन्न हो गयी। खड़खड़ाहट की ध्वनि

से हरिणी ने भयसे ऊपर की ओर देखा। व्याध को देखते हो मृत्युभय से व्याकुल हो वह बोली-व्याध! तुम क्या चाहते हो, सच-

सच बताओ। व्याधने कहा- मेरे कुटुम्बके लोग भूखे हैं, अतः तुमको मारकर उनकी भूख मिटाऊँगा। मृगी बोली- भील। मेरे मांस से तुम को, तुम्हारे कुटुम्ब को सुख होगा, इस अनर्थकारी शरीर के लिये इससे अधिक महान् पुण्यका कार्य भला और क्या हो सकता है? परंतु इस समय मेरे सब बच्चे आश्रम में मेरी बाट जोह रहे होंगे। मैं उन्हें अपनी बहन को अथवा स्वामी को सौंपकर लौट आऊँगी। मृगी के शपथ खानेपर बड़ी मुश्किल से व्याधने उसे छोड़ दिया। द्वितीय प्रहर में उस हरिणी की बहन उसी की राह देखती हुई, ढूँढ़ती हुई जल पीने वहाँ आ गयी। व्याध ने उसे देखकर बाण को तरकश से खींचा। ऐसा करते समय पुनः पहले की भाँति शिवलिङ्ग पर जल-बिल्व पत्र गिर गये। इस प्रकार दूसरे प्रहर की पूजा सम्पन्न हो गयी। मृगी ने पूछा-व्याध। यह क्या करते हो? व्याध ने पूर्ववत् उत्तर दिया-मैं अपने भूखे कुटुम्ब को तृप्त करनेके लिये तुझे मारूँगा। मृगी ने कहा-मेरे छोटे-छोटे बच्चे घर में हैं। अतः मैं उन्हें अपने स्वामी को सौंपकर तुम्हारे पास लौट आऊँगी। मैं बचन देती हूँ। व्याध ने उसे भी छोड़ दिया।

व्याध का दूसरा प्रहर भी जागते-जागते बीत गया। इतने में ही एक बड़ा हृष्ट-पुष्ट हिरण मृगी को ढूँढ़ता हुआ आया। व्याधके बाण चढ़ाने पर पुनः कुछ जल-बिल्व पत्र लिङ्गपर गिरे। अब तीसरे प्रहर की पूजा भी हो गयी। मृगने आवाज से चौंककर व्याध की ओर देखा और पूछा- क्या करते हो? व्याध ने कहा-तुम्हारा वध करूँगा, हरिणने कहा-मेरे बच्चे भूखे हैं। मैं बच्चों को उनकी माता को सौंप कर तथा उनको धैर्य बँधाकर शीघ्र ही यहाँ लौट आऊँगा। व्याध बोला-जो-जो यहाँ आये वे सब तुम्हारी ही तरह बातें तथा प्रतिज्ञा कर चले गये, परंतु अभी तक नहीं लौटे। शपथ खाने पर उसने हिरणको भी छोड़ दिया। मृग-मृगी सब अपने स्थान पर मिले। तीनों प्रतिज्ञाबद्ध थे, अतः तीनों जाने के लिये हठ करने लगे। अतः उन्होंने बच्चों को अपने पड़ोसियों को सौंप दिया और तीनों चल दिये। उन्हें जाते देख बच्चे भी भागकर पीछे-पीछे चले आये। उन सबको एक साथ आया देख व्याध को अति हर्ष हुआ। उसने तरकश से बाण खींचा जिससे पुनः जल-बिल्वपत्र शिवलिङ्ग पर गिर पड़े। इस प्रकार चौथे प्रहर की पूजा भी सम्पन्न हो गयी।

रात्रिभर शिकार की चिन्ता में व्याध निर्जल, भोजन रहित जागरण करता रहा। शिवजी का रञ्चमात्र भी चिन्तन नहीं किया। चारों प्रहर को पूजा अनजाने में स्वतः ही हो गयी। उस दिन महाशिवरात्रि थी। जिसके प्रभाव से व्याध के सम्पूर्ण पाप तत्काल भस्म हो गये।

इतने में ही मृग और दोनों मृगियाँ बोल उठे-व्याध- शिरोमणे ! शीघ्र कृपाकर हमारे शरीरों को सार्थक करो और अपने कुटुम्ब-बच्चों को तृप्त करो। व्याध को बड़ा विस्मय हुआ। ये मृग ज्ञानहीन पशु होने पर भी धन्य हैं, परोपकारी है और प्रतिज्ञापालक हैं मैं मनुष्य होकर भी जीवनभर हिंसा, हत्या और पाप कर अपने कुटुम्बका पालन करता रहा। मैंने जीव-हत्या कर उदरपूर्ति की, अतः मेरे जीवन को धिक्कार है। धिक्कार है!! व्याध ने बाण को रोक लिया और कहा- श्रेष्ठ मृगो! तुम सब जाओ। तुम्हारा जीवन धन्य है!

व्याध के ऐसा कहने पर तुरंत भगवान् शङ्कर लिङ्ग से प्रकट हो गये और उसके शरीर को स्पर्श कर प्रेम से कहा- वर माँगो। 'मैंने सब कुछ पा लिया'- यह कहते हुए व्याध उनके चरणों में गिर पड़ा। श्रीशिवजी ने प्रसन्न होकर उसका 'गुह' नाम रख दिया और वरदान दिया कि भगवान् राम एक दिन अवश्य ही तुम्हारे घर पधारेंगे और तुम्हारे साथ मित्रता करेंगे। तुम मोक्ष प्राप्त करोगे। वही व्याध श्रृंगवेरपुर में निषादराज 'गुह' बना, जिसने भगवान् राम का आतिथ्य किया। वे सब मृग भगवान् शङ्कर का दर्शन कर मृगयोनि से मुक्त हो गये। शाप मुक्त हो विमान से दिव्य धामको चले गये। तब से अर्बुद पर्वतपर भगवान् शिव व्याधेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुए। दर्शन-पूजन करनेपर वे तत्काल मोक्ष प्रदान करने वाले हैं।

यह महाशिवरात्रि व्रत 'व्रतराज' के नाम से विख्यात है। यह शिवरात्रि यमराज के शासन को मिटाने वाली है और शिवलोक को देने वाली है। शास्त्रोक्त विधि से जो इसका जागरण सहित उपवास करेंगे उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होगी। शिवरात्रि के समान पाप और भव मिटाने वाला दूसरा व्रत नहीं है। इसके करने मात्र से सब पापों का क्षय हो जाता है।